ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

रेल मार्गों का निजीकरण

*581. **प्रो. रामबख्श सिंह वर्मा:** क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या घाटे में चलने वाले रेल मार्गों पर रेल चलाने के लिए निजी क्षेत्र से प्रस्ताव मांगे गए हैं;

(ख) यदि हाँ, तो उन रेल मार्गों का ब्यौरा क्या है जिन पर रेल चलाने के लिए निजी क्षेत्र से प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं; और

(ग) निजी क्षेत्र द्वारा रेल चलाने के लिए सरकार के साथ हुए उनके समझौते की शर्तों का ब्यौरा क्या है ?

रेल मंत्री (श्री नीतीश कुमार) : (क) जी, नहीं।

(ख)और (ग) प्रश्न नहीं उठता।

Privatisation of Rail Routs

†* 581. PROF. R.B.S. VARMA : Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state :

(a) whether proposals have been invited from private sector for running trains on the rail routes going in losses;

(b) if so, the details of the number of rail routes for which proposals have been received from private sector for running trains; and

(c) the details of the terms and conditions of the agreements made with private sector by Government for running trains by them?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI NITISH KUMAR) : (a) No, Sir.

(b) and (c) Do not arise.

---

†Original notice of the question was received in Hindi.

प्रो. रामबक्ष सिंह वर्मा : माननीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से माननीय रेल मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि घाटे में चलने वाले मुख्य अथवा ब्रांच रेल मार्ग कौन से हैं और घाटे को कम करने, समाप्त करने और अंततः लाभ में बदलने के लिए ··· **(व्यवधान)**

श्री सभापति : आपने क्वश्चन पूछा है कि क्या प्रस्ताव मांगे हैं, तो उन्होंने कहा है कि नहीं मांगे गए हैं।

प्रो. रामबक्ष सिंह वर्मा : मान्यवर, जो घाटे में चलने वाली रेल लाइनें हैं मैं उन्हीं के बारे में प्रश्न कर रहा हूं।

श्री सभापति : वही तो कह रहे हैं कि प्रस्ताव नहीं मांगे हैं।

प्रो. रामबक्ष सिंह वर्मा : नहीं, मान्यवर, मैं यह पूछ रहा हूं कि ··· **(व्यवधान)**

श्री सभापति : जो क्वश्चन पूछा है आप उसी में से बोलिए।

प्रो. रामबक्ष सिंह वर्मा : मान्यवर, मैं उसी के संबंध में पूछ रहा हूं, अगर आपकी इजाजत हो तो।

श्री सभापति : नहीं, मेरी इजाजत की जरूरत नहीं है। यह इजाजत तो क्वश्चन देता है, क्वश्चन का फार्म देता है। क्वश्चन का फार्म यह है कि मैं आपको बता रहा हूं कि क्या घाटे में चलने वाले रेल मार्गों पर रेल चलाने के लिए निजी क्षेत्र से प्रस्ताव मांगे गए हैं, तो उन्होंने कहा कि नहीं।

प्रो. रामबक्ष सिंह वर्मा : मान्यवर, मैं यह पूछ रहा हूं कि उस घाटे को कम करने के लिए, उसे समाप्त करने के लिए अथवा लाभ में बदलने के लिए माननीय मंत्री जी क्या कोई कदम उठा रहे हैं, क्या कोई कार्यवाही कर रहे हैं या करने पर विचार कर रहे हैं ?

श्री सभापति : या ज्यादा घाटा हो तो उसकी कोई व्यवस्था कर रहे हो ?

श्री नीतीश कुमार : सभापति महोदय, घाटे में चलने वाली, खासकर जो ब्रांच लाइंस हैं, उन की समीक्षा हर वित्तीय वर्ष में होती है और यह कोशिश होती है कि हम कुछ ऐसे कदम उठाएं जिस में घाटे को कम किया जाए। उस में खास तौर से एक उपाय यह भी होता है कि अगर किसी ब्रांच लाइन में ट्राफिक कम है तो हम जो स्टेशन है, उस को हाल्ट स्टेशन में परिणत कर दें, हाल्ट कांट्रेक्टर को दे दें। फिर दूसरी बात यह आती है कि कभी-कभी यह देखा गया कि यात्री बहुत कम हैं, तो उस हिसाब से उस पूरे सेक्शन में एक ही ट्रेन एक बार में चलाई जाए जिस के चलते सिग्नल वगैरह की जरूरत नहीं पड़ती। तो इस प्रकार से उस में स्टाफ की भी कम जरूरत पड़ती है और जहां जरूरत पड़ती है तो गाड़ियां चलाने के बजाय रेल बस चलायी जा सकती हैं,

डी०एम०यू० ट्रेंस चलायी जा सकती हैं। इस प्रकार के कई कदम उठाए जाते हैं। इस तरह की जितनी ब्रांच लाइंस हैं जो घाटे में चल रही हैं, उस की पूरी स्थिति का अध्ययन करने के लिए कि कैसे उन के घाटे को कम किया जाए और कौन से कदम उठाए जाएं, इस के लिए हम ने रेलवे बोर्ड के एक्जीक्यूटिव डायेरेक्ट्र्स की कमेटी बनायी है। वह कमेटी सम्बद्ध जोनल रेलवे के परामर्श के साथ ऐसी घाटे में चलने वाली हरेक ब्रांच लाइन का अध्यन कर रही है। उन की रिपोर्ट की हम प्रतीक्षा कर रहे हैं।

प्रो. रामबक्ष सिंह वर्मा : मान्यवर, मैं रेल मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि वह कौन-कौन सी मुख्य और ब्रांच रेलवे लाइंस हैं जो घाटे में चल रही हैं और यह जो उत्तर रेलवे की फरुर्खाबाद-शिकोहाबाद ब्रांच लाइन है, क्या यह घाटे में चल रही है? अगर घाटे में चल रही है तो पिछले तीन वर्षों में इस ब्रांच रेलवे लाइन पर वर्षवार कितना घाटा हुआ है?

श्री नीतीश कुमार : महोदय, यह तो एक स्पैसिफिक क्वैश्चन है। वैसे कुल 115 लाइंस हैं जिन पर हम हर साल अध्ययन करते हैं। उन में किसी साल घाटा बढ़ता है, किसी साल घाटा घटता है। महोदय, अगर 2000-2001 का फिगर लें तो कुल 15 लाइंस पर कुल मिलाकर 439 करोड़ के करीब घाटा हुआ है, लेकिन 2001-2002 में यह घाटा घटकर 434 करोड़ रह गया।

Uneconomic Branch Lines

*582. SHRIMATI AMBIKA SONI :

DR. T. SUBBARAMI REDDY†† :

Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state :

(a) whether Railways have decided to weed out uneconomic branch lines and have issued instructions for closure/dismantling of 21 such lines;

(b) whether high level Expert Committee had unanimously recommended that where alternative modes of transport exist or can be developed, such branch lines should be closed down;

(c) if so, the States in which these lines exist;

(d) whether States have offered to provide help and assistance for not weeding out these uneconomic branch lines;

(e) if so, the reaction of Government thereto; and

†† The question was actually asked on the floor of the House by Dr. T. Subbarami Reddy.